प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर की काव्य गोष्ठी में हिन्दी व वर्तमान परिस्थितियों पर हुयीं कविताएं

पंतनगर। १२ सितम्बर, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय द्वारा आयोजित किये जा रहे हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत कल सायं एक काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें पंतनगर सहित आस-पास के क्षेत्र, यथा काशीपुर, गदरपुर, रूद्रपुर, हल्द्वानी, रामपुर, बाजपुर, सुल्तानपुर पट्टी एवं पंतनगर के प्रख्यात कवियों ने भागीदारी की। सायं ३:३० बजे से प्रारम्भ हुई यह गोष्ठी लगभग ५:३० बजे तक अनवरत चलती रही। अधिकतर कवियों की रचनाएं हिन्दी, आज के हालातों, आतंकवाद, भ्रूण हत्या, देश भक्ति इत्यादि पर केन्द्रित रहीं।

काव्य गोष्ठी का प्रारम्भ रामपुर के कवि जितेन्द्र कमल आनंद ने मां शारदा की वंदना से किया, जिसके बाद उन्होंने अपनी कविता 'जो पिता से प्यार करती व हमारी बेटियां है' का लयबद्ध गायन किया। तत्पश्चात अलग-अलग कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। काव्य गोष्ठी के समन्वयक, पंतनगर के के.पी. सिंह 'विकल', ने गोष्ठी का संचालन किया तथा हिन्दी सप्ताह का प्रतिनिधित्व करती कविता "हमारी जान है, ईमान है, पहचान है हिन्दी, यहां के नौजवानों की मधुर मुस्कान है हिन्दी।" से अपना काव्य पाठ प्रारम्भ किया। बाजपुर से आये ओज के कवि, विवेक चौहान, ने अपनी कविता "उठी गर जो तिरंगे पर कभी उंगली किसी की तो। कसम मां भारती की हाथ उसका काट देंगे हम।।" से श्रोताओं में जोश भर दिया। हल्द्वानी के व्यंगकार वेद प्रकाश अंकुर तथा काशीपुर के जयंत शाह ने अपनी हास्य कविताओं से आज की परिस्थितियों पर कटाक्ष किया। काशीपुर के ही युवा कवि तकी बाजपुरी ने भी अपनी कविताओं से श्रोताओं को भाव-विभोर किया। उनकी कविता "भले कितनी ही हो दिक्कत है तो है। कि सच कहने की आदत है तो है।।" तथा हिन्दी भ्रूण हत्या पर उनकी रचनाओं ने श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किया। खालिद सुल्तानपुरी ने मां-बीबी के बीच फंसे व्यक्ति की हालत पर सटीक कविता सुनायी, जिसपर श्रोताओं ने खूब तालियां बजायीं। सुबोध कुमार शर्मा, जो गदरपुर से आये थे, ने हिन्दी के बारे में कविता करते हुए कहा "आओ ऐसा काम करें, हिन्दी का सम्मान करें।" काव्य गोष्ठी में आयी दो कवियित्रियों ने अपनी सुरीली आवाज से श्रोताओं को अभिभूत किया। पंतनगर की अरूणा मल्ल ने अपनी कविता "आओ इतिहास के पृष्ठ खोले, आसुओं से जो लिखे हुए हैं।" से भारत की आजादी पाने में किये गये बलिदानों का जिक्र किया। हल्द्वानी से आयी प्रीति जोशी सयाल ने हिन्दी के बारे में बोलते हुए कहा "यही पहचान अपनी है, अभी इसको संभालो तुम।" काशीपुर के विवेक प्रजापति ने " ऐसा वर दे ये कलम सदा भारत मां का गुणगान लिखे" कविता से शुरूआत कर अपनी ओजस्वी कविताओं से श्रोताओं में जोश भरा एवं पंतनगर के ओम शंकर मिश्रा ने अपनी कविता के साथ-साथ विशेष भाव-भंगिमाओं से श्रोताओं की तालियां लूटी।

अंत में काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डा. नरेश कुमार, प्रभारी अधिकारी प्रकाशन, ने सभी कवियों, को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। उन्होंने कवियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए ऐसे प्रयासों को आगे भी बनाये रखने की बात कही।

पंतनगर विश्वविद्यालय में हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित काव्य गोष्ठी में प्रतिभाग करने आए कवियों के साथ डा. नरेश कुमार, डा. प्रमोद मल्ल एवं डा. बीरेन्द्र कुमार।